तृतीय अध्याय

• युगे - युगे क्रान्ति `नाटक में पात्र तथा चरित्र-चित्रण •

तृतीय अध्याय

` युगे - युगे क्रांति` नाटक में पात्र तथा चरित्र चित्रण `

प्रास्ताविक --

चरित्र-चित्रण नाटक का एक महत्वपूर्ण अंग है । नाटक का कथानक जीवंत पात्रों की क्रियाशीलता द्वारा ही प्रस्फुटित होता है । अतएव नाटक की सफलता के लिए नाटकीय स्थितियों की योजना के साथ-साथ चरित्र-चित्रण की प्रभावात्मकता भी आवश्यक है । चरित्र-चित्रण की दृष्टि से विष्णु प्रभाकर का ` युगे-युगे क्रांति` नाटक विशेष महत्व रखता है ।

इस नाटक में लगभग बाइस पात्र हैं,लेकिन इनमें से लगभग ८ पात्र ही बहुत महत्वपूर्ण लगते हैं । वे सब अपने आप को क्रांतिकारी समझाते हैं ।` युगे - युगे क्रांति` यह नाटक पाँचव पीढियों को प्रस्तुत करता हुआ है । इसी कारण नाटक में इन पाँच पीढियों की अलग - अलग पाँच कहानियाँ चित्रित हैं और हर एक कहानी का एक पात्र मुख्य रहा है । लेकिन नाटक के प्रारंभ से अंततक सिर्फ एक ही पात्र रह जाता है और वह है देवीप्रसाद जो कि वास्तव जीवन का आदमी है ।

३.१ कल्याणसिंह --

नाटक में पहली पीढी है सन १८७५ की और इस पीढी का नायक है कल्याणसिंह । कल्याणसिंह की कहानी के साथ नाटक की कथावस्तु आगे बढती है । कल्याणसिंह की शादी रामकली से हुई है उस काल की सामाजिक पध्दति के अनुसार वह दिन में अपनी पत्नी को नहीं मिल सकता । फिर भी उसके मन में अपनी पत्नी को देखनी की जबरदस्त इच्छा है । किन्तु बडों के सामने अपनी पत्नी से मिलना - बात करना तत्कालीन समाज में त्याज्य था । यहीं जो सामाजिक पध्दति है इसके प्रति कल्याणसिंह असंतोष प्रकट करता है ।

" अपनी घरवाली से मिलने के लिए मुझे रात में चोरों की तरह छिपकर आना पडता है। मुझे इतना भी हक नहीं कि मैं उसका मुँह अच्छी तरह देख सकूँ।" [१]

एक साधू के दर्शन के कारण कल्याणसिंह पति-पत्नी का रिश्ता तथा दोनों के कर्तव्य को अच्छी तरह से समझा गया है। इसी कारण वह औरत को एक गुडिया मानने से इन्कार करता है और पत्नी का मुँह दिन में देखकर समाज को खोखला करनेवाले एक पाखण्ड का पर्दाफाश करता है। इस कारण उसे अपने पिता से पिटना पडता है फिर भी वह डरता नहीं।

इस प्रकार कल्याणसिंह सन १८७५ में अपनी पत्नी का मुँह दिन में देखकर प्रचलित सामाजिक प्रथा के विरुध्द क्रांति करता है। अब कथावस्तु आगे बढकर सन १९०१ में आती है। कल्याणसिंह का युवा पुत्र प्यारेलाल एक विधवा के साथ शादी करना चाहता है तो वही कल्याणसिंह उसका विरोध करता है। अपने पुत्र की माँ-बाप के एक और कर्तव्य की याद दिलाता है। वह कहता है --

..... मैं नहीं जानता था कि यह दिन देखने के लिए जिन्दा रहूँगा। जब मेरा ही बेटा मेरे सामने खडा होकर मेरे मुँह पर मेरा विरोध करे मेरी बात मानने से इन्कार कर दे, लेकिन यह खानदान की इज्जत का सवाल है। उसे बचाने के लिए मैं जो भी कर सकूँगा, करूँगा। मैं उसपर ऐसे हजारों बेटों को कुरबान कर सकता हूँ। लेकिन किसी के सामने झुक नहीं सकता।" [२]

कल्याणसिंह आज पिता बन गया है इसी कारण पुरातणपंथी बन गया है। कल्याणसिंह ने अपने युग में साहस किया। लेकिन बेटे ने जब अपने युग के अनुसार विधवा से विवाह किया तो उसीने अपनी संतान का विरोध किया, उसे पाप कहने लगा।

इस तरह हम देखते है कि कल्याणसिंह जैसा क्रांतिप्रिय व्यक्ति बाद में रूढीप्रिय बन जाता है।

---

१ विष्णु प्रभाकर - युगे युगे क्रांति - पृ.१३।

२ वही पृ.३०-३१।

३.२ प्यारेलाल --

नाटक की दूसरी पीढी है सन १९०१ की और इस पीढी का नायक है प्यारेलाल। प्यारेलाल अपने समय के युवकों का प्रतिनिधित्व करता है। प्यारेलाल ने मरे बाजार में अपने पिता की इजाजत के बिना सब के सामने प्रतिज्ञा की है कि वह लाला सगुनचंद की बालविधवा बेटी कलावती से शादी करेगा और यह प्रतिज्ञा उसने जोश में नहीं होश में ही की है। अपना मत सबके सामने रखते हुए वह कहता है --

.... " पुरुष को जब एक से अधिक शादी करने का अधिकार है तो नारी ने ही कौन-सा अपराध किया है। पुरुष एक स्त्री के जीते - जी दूसरी स्त्री ला सकता है लेकिन नारी मरी जवानी में और जवानी में ही क्यो बचपन में ही पति के मर जाने पर दूसरी शादी नहीं कर सकती। उसने अपने पति को आँख उठाकर देखा तक नहीं। छोटी-सी नादान उम्र में ही वह विधवा हो गई है। वह यह भी नही जानती कि जिन्दगी किस चिड़ियाँ का नाम है। विवाह होता क्या है ? लेकिन यह बर्बर समाज उसे दूसरा विवाह करने का अधिकार नहीं देता है। यौवन को बरबाद करने का अधिकार देता है। चोरी-चोरी पाप करने का अधिकार देता है। लेकिन दूसरी बार अग्नि को साक्षी करके विवाह करने का अधिकार नहीं देता।" [१]

समाज में नारी की जो स्थिति है उसका वास्तव चित्रण प्यारेलाल ने किया है। नारी पर होनेवाले इन अत्याचारों के विरुध्द वह आवाज उठाना चाहता है। इसकी वह स्वयं कृति भी करता है। इस बारे में डॉ.के.पी.शहा अपने प्रबन्ध में लिखते हैं -- " यह समाज और धर्म की विडंबना है। इसका कारण है हमारा पुरुषप्रधान समाज उसने अपने सुख और सुविधा के लिए स्त्री पर ज्यादा से ज्यादा बन्धन डालकर उसे अबला बना दिया है।" [२]

---

१ विष्णु प्रभाकर - युगे युगे क्रांति - पृ.२२-२३।

२ डॉ.के.पी.शहा - विष्णु प्रभाकर के साहित्य का अनुशीलन, शिवाजी विश्वविद्यालय कोल्हापुर की पीएच.डी.उपाधि हेतु स्वीकृत शोध-प्रबन्ध - पृ.९७।

प्यारेलाल किसी भी कीमत पर अपनी प्रतिज्ञा का पालन करता है चाहे जान चली जाए । उसके पिता कल्याणसिंह उसे डराते - धमकाते,घर से बाहर निकालने की धमकी देते हैं लेकिन प्यारेलाल किसी बात को नहीं मानता । प्यारेलाल जो भी कर रहा था सोच-समझकर कर रहा था । उसके निम्नलिखित वक्तव्य से उसका आत्मविश्वास प्रकट होता है ।

".....आज पहली बार मुझे अपना मला करने का मौका मिला है । उस मले में ही समाज का मला है,धर्म का मला है ।" [१]

अपने सिध्दांत और आदर्शों के लिए वह घर का त्याग करने के लिए भी तैयार होता है । अपनी जिद्द का पक्का प्यारेलाल अंत में विधवा कलावती से विवाह करता है और समाज के सामने आदर्श प्रस्तुत करता है ।

कथावस्तु आगे बढती है २०-२२ वर्षों के बाद इसी प्यारेलाल की पुत्री शारदा प्यारेलाल के सामने खडी है । प्यारेलाल ने अपने माता-पिता के विरुध्द विद्रोह किया था, लेकिन जब अपनी लडकी ने समय का साथ देने का प्रयत्न किया तो वह आग बबूला हो उठा । गांधीजी के आंदोलन में असंख्य लोगों के साथ प्यारेलाल की बेटी शारदा है । घर की चार दीवारों को लाँघकर वह पिकेटिंग करती है, जेल में चली जाती है । अपनी बेटी के व्यवहार से प्यारेलाल क्षुब्ध हो जाता है । उसके विचारों में उसने सिर से पल्ला क्या उतारा कुल की लाज ही उतार दी ।"

अपने समय में विधवा से विवाह करनेवाला प्यारेलाल अब पिता बनकर प्रतिक्रियावादी बन गया है । वह स्त्री-पुरुष में भेद करता है । उसके मतानुसार स्त्रियों को घर की चार दीवारों में ही बंद करना चाहिए । अपना मत स्पष्ट करने के लिए वह कहता है --" क्रांति मैंने भी की है लेकिन क्रांति का अर्थ यह नहीं है कि कुल,समाज और धर्म की लाज को घोलकर पी लिया जाए । मैं स्वयं जाता हूँ । देखता हूँ वह कैसे नहीं आती । उसे आना ही होगा ।" [२]

---

१ विष्णु प्रभाकर - युगे-युगे क्रांति - पृ.२९ ।

२ वही पृ.४४ ।

अन्य जाति और धर्म के लड़के से अपनी बेटी शारदाने शादी की लेकिन यह भी प्यारेलाल की मान्य नहीं है । अपने पितृत्व का अधिकार जताते हुए वह कहता है --" वह मेरी बेटी है,मैं उसका पिता हूँ । मेरी बिना,आज्ञा वह कुछ नहीं कर सकती । उसे वापस लौटना होगा । नहीं तो नहींतो मैं उसका गला घोंट दूँगा या फिर मैं जिन्दा नहीं रहूँगा ।" [१]

प्यारेलाल के ये विचार समय के साथ नहीं चलते । इसी कारण अपने युग में क्रांति करनेवाला प्यारेलाल पिता बनकर पुराणपंथी और दकियानुसी बन जाता है ।

३.३ शारदा और विमल --

अब तीसरी पीढी का प्रारंभ होता है । सन १९२०-२१ के समय का प्रतिनिधित्व करती है शारदा और उसके पति विमल ।

शारदा क्रांतिकारी पिता प्यारेलाल की बेटी है । उसने बड़े साहस के साथ विधर्मी विमल के साथ शादी की है । सारा जीवन गांधीजी के आदेशानुसार देश को समर्पित करनेवाली वह विरांगना है । घर की चार दीवारों को लांघकर वह समाज में खुले मुँह घुमती ही नहीं तो उसके सिर पर पल्लू भी नहीं है जो कि सामाजिक रीति के अनुसार होना चाहिए था । वह केवल पुरुषों की तरह भाषण ही नहीं देती तो रणचंडी बनाकर आग भी उगलती है । जिस दिन उसके सुधारक पिता ने भरे बाजार में उसके गालपर तमाचा मारा था (क्योंकि,उसके सिर पर पल्लू नहीं था ।) उसी दिन वह निश्चय करती है कि अब इन पुराने सड़े-गले रीति - रिवाजों को वह नहीं मानेगी किसी जमाने में औरतों के लिए सिर ढकन । चार दीवारों में बंद रहना,अच्छा रहा होगा लेकिन आज जमाना बदल गया है और वह बदलते जमाने में खूद बदलना चाहती है । वह अपने साथ अन्य स्त्रियों को भी बदलने के लिए प्रेरित करती है ।

शारदा की भाषणबाजी के कारण पुलिस उसे जेल ले जाते हैं । पुलिस के डराने धमकाने का उस पर कोई असर नहीं होता । बल्कि पुलिस को टोकते हुए

---

१ विष्णु प्रभाकर - युगे - युगे क्रांति - पृ.५१ ।

वह कहती है कि स्त्रियों के घरों में रहने के दिन बदल गए ।

शारदा जैसे क्रांतिकारी लड़की के साथ विमल शादी करता है । जात-पात,प्रांत इन सबको तोड़कर वे दोनों शादी करते हैं । शारदा के पिता प्यारेलाल बड़े ही कट्टर आर्यसमाजी हैं । वे अपने दायरे से बाहर नहीं आना चाहते । लेकिन शारदा उनकी चिंता नहीं करती । वह अपना भविष्य खुद बनाना चाहती है । शारदा का यह साहस देखकर विमल उसे झाँसी की रानी कहते हुए अपने दिल में स्थान देता है । अब एक समय ऐसा आ गया कि शारदा और विमल माँ-बाप बन गए । सन १९४२ के समय का प्रतिनिधित्व करता है शारदा और विमल का पुत्र सदीप ।

जिस विमल ने जातीयता और प्रांतीयता की दीवारें तोड़कर स्वतंत्रता के लिए घर से बाहर आनेवाली लड़की शारदा से आगे बढ़कर विवाह किया वही आज अपने पुत्र प्रदीप की शादी के कारण चिंतित है । प्रदीप ने कोली जाति की ईसाई लड़की से कोर्ट में जाकर शादी की है । विमल धर्म और जाति से देश को सब से ऊँचा मानता है । इसी कारण वह प्रदीप और जैनेट की शादी का स्वागत करता है । पर जिस समाज में वे रहते हैं उसकी परंपरा या रीति-रिवाजों के अनुसार, विमल चाहता है कि जैनेट को शुध्द करके जान्हवी बना लिया जाय । तब प्रदीप अपने पिता की बात मानने से इन्कार कर देता है तो विमल क्रोधित होकर उसे जायदाद न देने की बात कहता है । शारदा भी अपने पति का साथ देकर प्रदीप को समझाना चाहती है । पर उनका पुत्र प्रदीप और पुत्री सुरेखा दोनों ही माँ-बाप को दकियानूसी और पुराणपंथी समझते हैं ।

३.४ प्रदीप --

अंतरप्रांतीय और अंतरधर्मिय विवाह करनेवाले विमल और शारदा का पुत्र है प्रदीप । वह आधुनिक युग का प्रतिनिधि है । उसने अपने मतानुसार जैनेट नामक कोली जाति की ईसाई लड़की से कोर्ट में जाकर शादी की है । प्रदीप के पिता जैनेट को अपनी बहू बनाने पर सहमत हैं लेकिन वे चाहते हैं कि उसे धर्म के

अनुसार शुध्द करके जान्हवी बना लिया जाय । प्रदीप इस बात के लिए तैयार नहीं है । ऐसी बातों को वह जरा भी नहीं मानता । वह कहता है " जैनेट को यदि शुध्द करके जान्हवी नाम दे दिया जाएगा तो क्या इसका कुछ बदल जाएगा ? नाम बदल जाने से गुण और दोष नहीं बदल जाते । बदल सकते तो आज हर बुरी चीज के अच्छे नाम रख दिए जाते । नहीं माताजी, मैं इस ढोंग में विश्वास नही करता । इस या उस धर्म में जाने से किसी का स्वभाव नहीं बदलता ।" [१]

प्रदीप निश्चय के साथ कहता है कि जैनेट धर्मपरिवर्तन नहीं करेगी । धर्म परिवर्तन के द्वारा आत्मा की शुध्दि को भी वह नही मानता । अपने बाप से वह सवाल पूछता है कि ' अगर इसी प्रकार की धार्मिक शुध्दि से आत्मा में परिवर्तन होता है तो जेलों में बंद सभी अपराधियों को क्यों नहीं शुध्द किया जाता ?' प्रदीप के इस मुँहतोड सवाल का कोई जवाब उसके पिता के पास नहीं है । इसी कारण वह गुस्से में आकर प्रदीप को घर से बाहर जाने की धमकी देता है और उसे जायदाद में से कुछ नहीं मिलेगा यह भी कह देता है । प्रदीप घर छोड देता है । कथावस्तु आगे बढती है और आज के युग में आती है । तब प्रदीप अनिरुध्द और अन्विता, इन दो बच्चों का बाप बन जाता है ।

प्रदीप आकंठ राजनीति में डूबा हुआ है । यश और प्रतिष्ठा, उसे सबकुछ प्राप्त है फिर भी उसकी परेशानी की कोई सीमा नहीं । उसके हाथ में उसकी बेटी अन्विता की शादी का निमंत्रण पत्र है पर वहाँ दुल्हे के नाम की जगह दीपक का नाम नहीं है तो स्वीड चित्रकार नेलसन का है । अर्थात प्रदीप की पुत्री अन्विता प्यार करती थी दीपक से और शादी कर रही है नेलसन से । उसी प्रकार उनका पुत्र अनिरुध्द प्रेम के नाम पर संगिनी बदल रहा है । आज की दुनिया में प्रेम का अर्थ ही नहीं, मूल्य भी बदल रहे हैं । यह बात प्रदीप और जैनेट मानने को तैयार नहीं हैं । फिर भी प्रदीप को अपने बुढापे का एहसास होता है । इसी कारण वह

---

१ विष्णु प्रभाकर - युगे - युगे क्रांति - पृ.५९ ।

कहता है" यह लेकिन शाप बुढापे की ही निशानी है। शंका और दुर्बलता इसी के दूसरे नाम हैं। हम दुर्बल हो गए हैं। हमें सहारे की आवश्यकता है। नियम और बंधन इसी सहारे के दूसरे नाम हैं। संतान भी वही सहारा है। यह सहारा ही हमको प्रतिक्रियावादी और ढकियानूसी बनाता है। लेकिन नहीं जैनेट, हम अब भी काल और आयु से लडेंगे।"[१]

इस तरह प्रदीप बुढापे में भी लडने की बाते करता है। प्रदीप के विचारों में संघर्ष भी दिखायी देता है। उसे लगता है कि अन्विता और अनिरुध्व हम ही हैं। जब वह उनसे विवाद करता है तो उसे लगता है कि वह स्वयं अपने आपको उत्तर दे रहा है,जैसे अपने ही विरुध्द खडा है। इस बात को और भी स्पष्ट करते हुए सूत्रधार कहता है कि जब पुत्र पिता के विरुध्द खडा होता है,तो वह स्वयं पिता का ही नवीन संस्करण होता है।

३.५ सुरेखा --

समय का साथ देनेवाली सुरेखा यह प्रदीप की बहन है। वह भी अपने समय में समय का साथ देकर अपने मैय्या के अंतर्धर्मीय विवाह का स्वागत करती है। तब उसके पिता विमल उस पर चिढ जाते हैं लेकिन पिता से जरा भी न डरते हुए वह कहती है --" युग की पुकार सुनना यदि रंग चढना है,तो मैं इसे अपना गौरव समझूँगी। लेकिन पिताजी,एक बात कहती हूँ - जैसे सागर के ज्वार को आदेश नहीं दिया जा सकता,वैसे ही नई पीढी की आकांक्षाओं को भी अपनी सुविधा के अनुसार नहीं मोडा जा सकता।"[२]

अपनी मामी,जैनेट का धर्म बदलने की बात जब वह अपने पिताजी से सुनती है तो वह पिताजी से कहती है -" मनुष्य मनुष्य है। धर्म,मत और जाति बदलने से वह नहीं बदल जाता। कुल,रीति और समाज के भय से शुध्दि का ढोंग करना मनुष्य और मनुष्यता का घोरतम अपमान है।"[३]

---

१ विष्णु प्रभाकर - युगे युगे क्रांति - पृ.८१-८२।

२ वही पृ.६२।

३ वही पृ.६३।

इस तरह सुरेखा एक प्रगतिशील तथा आधुनिक लडकी दिखायी देती है ।

प्रदीप की पुत्री अन्विता जो अपने-आपको बहुत सुधारित कहलाती है, फिर भी शादी का बंधन जरूरी मानती है । लेकिन सुरेखा उसे पुराणपंथी ढकियानूसी कहते हुए कहती है कि तुम पिछड गयी हैं , वह कहती है --

" अभी बताती हूँ । तुम्हारा भाई अनिरुध्द तुमसे दो वर्ष छोटा है । उसने दो वर्ष में तीन संगिनियाँ बदली । केवल स्त्री और पुरुष की सत्ता में विश्वास करता है यानी नर मादा की सत्ता में विश्वास करता है ....
... अनिरुध्द तो विवाह बंधन को मानता ही नहीं । इसी कारण वह तुम्हें ढकियानूसी,पुराणपंथी कह सकता है ।" [१]

इस तरह सुरेखा दोनों पीढियों में एक अलग पात्र दिखायी देता है जो पाठकों के मनपर अमीट छाप छोड देता है । सुरेखा के कारण ही उसके माता-पिता की आँखें खुल जाती हैं ।

३.६ अनिरुध्द --

अनिरुध्द और अन्विता प्रदीप और जैनेट के युवा पुत्र-पुत्री हैं । अनिरुध्द यह स्वर वर्तन ही मूल्य माननेवाला तथा जीवन का कटुसत्य बताने वाला पात्र है । अनिरुध्द की बहन अन्विता ने प्रेमदीपक से किया और शादी नेलसन से तय की जिसके कारण प्रदीप और जैनेट अस्वस्थ हैं । पर अनिरुध्द को अन्विता का यह व्यवहार गलत नहीं लगता । क्योंकि उसके विचारों में असल बात प्यार करने की है, व्यक्ति कोई भी हो सकता है । कल दीपक से प्यार करती थी आज नेलसन से कर रही है । समाज में कोई मूल्य स्थिर नहीं होते और समाज अपनी गती से चलता है । उसे चलने से कोई रोक नहीं सकता । अनिरुध्द भी समय-समय पर अपनी संगिनी बदलता है । वह अपनी नयी संगिनी रिता का परिचय माँ-बाप से करा देता है । इसके पहले उसकी कई संगिनियाँ थी जैसे श्यामला,सविता,नंदिता । इस बात पर

---

१ विष्णु प्रभाकर - युगे-युगे क्रांति - पृ.७९-८० ।

अपने चिढे हुए पिताजी से वह कह देता है कि - " मुझे आश्चर्य इस बात का है कि आपको मेरी इस बात से आश्चर्य हुआ । देखिए न डैडी, आप पहले गणतंत्र दल में थे फिर जनतंत्र में आ गए । उसके बाद जन-क्रांति में गए । अब फिर दक्षिण गणतंत्र में जा मिले । पिताजी सिध्दांत के नामपर दल बदलते हैं बेटा, प्रेम के नामपर संगिनियाँ बदलता है ।"[१] ...." और डैडी, सच बात तो यह है मैं विवाह में विश्वास नहीं करता। विवाह हमारे समाज में मात्र एक परंपरा का पालन है । उसके पीछे अब जीवन की कोई अनुभूति नहीं रह गई है । और अनुभूति के अभाव में परंपराएँ सड जाती है । इन सडी-गली परंपराओं से चिपके रहने से समाज रोगी हो सकता है ।"[२] ... स्त्री के लिए पति अनिवार्य नहीं है, पुरूष अनिवार्य है। विवाह के मंत्र या मॅजिस्ट्रेट सर्टिफिकेट से स्त्री-पुरूषों के संबंधों में कोई अंतर नहीं पडता और यदि यह आवश्यक हो तो यह काम बुढापे में हो सकता है ।.... जब तक हम युवा है हमें प्रेम चाहिए । प्रेम करने के लिए सर्टिफिकेट की आवश्यकता नहीं होती । प्रेम मुक्ति में है बंधन में नहीं । विवाह स्त्री के गुलामी का पट्टा है इसलिए बंधन है ।"[३]

इस तरह हम देखते हैं कि अनिरुध्द के विचार भारतीय संस्कृति के विरुध्द है उन पर पाश्चात्य विचारों का बहुत प्रभाव दिखायी देता है । आज की युवा पीढी स्त्री पुरूष संबंध को किस दृष्टि से देखती है इसका उदा. हमें अनिरुध्द के चरित्र से दिखने को मिलता है ।

---

१ विष्णु प्रभाकर - युगे-युगे क्रांति - पृ.७२ ।

२ वही पृ.७२-७३ ।

३ वही पृ.७४-७५ ।

३.७ अन्विता --

प्रदीप और जेनेट की पुत्री अन्विता एक ऐसा पात्र है जिसके विचारों की तरफ हमें ध्यान देना आवश्यक है। वह नए युग के साथ कदम मिलाते हुए आगे बढ रही है। अन्विता अपने पिताजी से समझौते के साथ बातें करती है और उनको समय के साथ चलने के लिए प्रेरित करना चाहती है। उसका कहना है कि पुरानी पीढी के लोग पुरातन पंथी ही तो हो सकते हैं।.... दुनिया बहुत तेजी से आगे बढ रही है। हम अगर समय का साथ नहीं देंगे तो पिछड जाएँगे। बीता हुआ हर क्षण मर जाता है और जो उसके पीछे भागते हैं वे भी फॅासिल बनकर रह जाते हैं।.... चुनौती बुढापा नहीं देती ,जवानी देती है। बुढापा समझौता करता है या हठ करता है। .... अगर जवानी हठ करती है तो समझौते के लिए नहीं स्थिर मूल्यों की रक्षा के लिए भी नहीं। खोज के लिए,नए मूल्यों की स्थापना के लिए। जिस क्षण जवानी नए मूल्यों की खोज से गुजर जायेगी उसी क्षण क्रांति रूक जाएगी।" [१]

इस तरह अन्विता अपनी शादी स्वयं तय करके शादी का निमंत्रण कार्ड स्वयं अपने माता-पिता को देनेवाली तथा प्यार एक से और शादी दूसरे से करने -- वाली बडी अत्याधुनिक लडकी दिखायी देती है।

इन बदले हुए मूल्यों के बारे में डॉ.के.पी.शाह अपने प्रबन्ध में लिखते हैं --

" एक जमाना था जब प्रेम में व्यक्ति महत्वपूर्ण स्थान रखता था। उस व्यक्ति के लिए प्रेमी जीते थे मरते थे। लेकिन आज बाकी चीजों की तरह प्रेम मे व्यक्ति भी बदले जाने लगे। व्यक्ति का कोई मूल्य या महत्व नहीं रहा। प्रेम की पवित्रता, दिव्यता और भव्यता अर्थहीन हो गयी है। आज की आधुनिक युवती

---

१ विष्णु प्रभाकर - युगे युगे क्रांति - पृ.७७-७८।

एक पुरूष के साथ एक जनम तक भी साथ निभाना नहीं चाहती ।" [१]

३.८ देवीप्रसाद --

विष्णु प्रभाकर के ' युगे - युगे क्रांति ' नाटक में आदि से अंत तक आनेवाला देवीप्रसाद एक ऐसा पात्र है जो नई मान्यताओं को मानता है और प्राचीन संस्कारों का भी ऊसपर प्रभाव है । देवीप्रसाद पुराने तथा नये मूल्यों के बीच अंतर्द्वन्द्व लेकर रहनेवाला पात्र है । उसकी पुत्री के विवाह से वह चिंतित है, लेकिन लडकी जब अपनी इच्छानुसार विवाह करना चाहती है तो वह उसे विरोध करता है ।

देवीप्रसाद परंपरावादी सिध्दांतप्रिय एक सामान्य व्यक्ति है । वह आज के पिता का सही प्रतिनिधित्व करता है । देवीप्रसाद परंपरागत विचारधारा का समर्थक होने के कारण अपनी पुत्री के प्रेमविवाह को वह अपना अपमान समझाता है । अपने अहम पर प्रहार होते देखकर अहम मान्यतावादी स्वर में वह कहता है --

" तुम नहीं जानते मैं अपनी लडकी के विवाह को लेकर कितना परेशान हूँ । लेकिन मैं यह कभी नहीं स्वीकार कर सकता कि मेरी आज्ञा के बिना वह कुछ करे । आखिर मैं पिता हूँ । मेरे कुछ कर्तव्य हैं अधिकार है । वे कर्तव्य और अधिकार मुझे इसलिए तो प्राप्त हुए हैं कि मैं अधिक अनुभवी हूँ । हर बुजुर्ग अनुभवी होता है ।" [२]

देवीप्रसाद सामाजिक मान्यताओं एवं परंपराओं से चिपके रहना अधिक पसंद करता है तथा अपने अन्य परिवार के सदस्यों को भी परंपरागत राह पर चलने के लिए विवश करता है ।

देवीप्रसाद के कथन से यह स्पष्ट होता है कि उसे सामाजिक परंपरागत मूल्यों के प्रति आस्था है उसे परंपरागत जीवन का मोह तथा पिता के उत्तरदायित्व

---

१ डॉ.के.पी.शाहा - विष्णु प्रभाकर के साहित्य का अनुशीलन, शिवाजी विश्वविद्यालय,कोल्हापुर की पीएच.डी.उपाधि हेतु स्वीकृत शोध - प्रबन्ध - पृ.७२ ।

२ विष्णु प्रभाकर - युगे युगे क्रांति - पृ.५८ ।

का अहसास होता है। वह इस परिवर्तनशील युग में भी अतीत की परंपराओं के मध्य जीना और अपने परिवार के अन्य सदस्यों को भी उसी के अनुरूप जीने के लिए प्रेरित करना चाहता है। देवीप्रसाद सामाजिक मूल्यों में बंधकर, वैयक्तिक स्वतंत्रता को नकारता है। भीतर से आधुनिकता के प्रति आसक्ति होते हुए भी वह समाज के अन्य लोगों से भयभीत रहता है। देवीप्रसाद की भूमिका में परंपरा एवं आधुनिकता का द्वन्द्व तो अवश्य है लेकिन मानसिक तनाव एवं तद्जन्य अंतर्द्वन्द्व का अभाव है। उसे चरित्र द्वारा सामाजिक मूल्यों के प्रति आसक्ति ही दिखाई देती है।

निष्कर्ष --

'युगे - युगे क्रांति' नाटक में पात्रों को चित्रित करते वक्त विष्णु जी का यही उद्देश्य रहा है कि हर पात्र अपने-अपने युग में संघर्षशील और क्रांतिकारी है। इस चरित्र-चित्रण में यथार्थ जीवन के चित्र हैं। अधिकांश पात्रों का चरित्र-चित्रण और चरित्र विकास यथोचित ढंग से हुआ है। इन यथार्थ चरित्रों में कई पात्रों की दुविधापूर्ण स्थिति एवं मानसिक उतार-चढाव का अंकन भी भली प्रकार हुआ है। इन पात्रों के चरित्रांकन में आत्यधिक स्वाभाविकता, यथार्थता एवं सजीवता मिलती है। प्रस्तुत नाटक में चित्रित पाँच पीढियों के पात्रों का चित्रण नाटककार ने यथार्थ के धरातल पर किया है और इनके माध्यम से युगो-युगों से चलती आई क्रांति को परिभाषित किया है।

इसमें चित्रित कल्याणसिंह सामाजिक कुरीतियों का पर्दाफाश करते हैं, किन्तु बेटा जब विधवा से विवाह करना चाहता है तो वे उसका विरोध करते हैं। प्यारेलाल एक विधवा से विवाह करता है किन्तु बेटी शारदा जब सिर पर पल्ला नहीं लेती, आंदोलन में भाग ले, भाषण देती है और अंतर्जातीय विवाह करती है तो वह उसका विरोधी बन जाता है। शारदा ने विमल के साथ अंतर्जातीय विवाह किया, किन्तु उनके बेटे प्रदीप ने जैनेट से जब अंतर्धर्मीय विवाह किया तब दोनों ने

जैनेट का नाम जान्हवी न करने की वजह से प्रदीप-जैनेट को घर से निकाल दिया । प्रदीप जैनेट ने अंतधर्मीय तथा अंतरप्रांतीय विवाह किया किंतु अपने बेटे अनिरुध्द तथा बेटी अन्विता का उन्मुक्त व्यवहार पसंद न कर उनका विरोध किया । निष्कर्षत. नाटक में चित्रित पाँच पीढियों के पात्र अपने जीवन के पूर्वार्ध में क्रांतिप्रिय रहे हैं किन्तु उत्तरार्ध में वे परंपरा या रूढिप्रिय बने दृष्टिगोचर होते हैं ।